International Journal of Enhanced Research in Educational Development (IJERED)
ISSN: 2320-8708, Vol. 13 Issue 6, November-December, 2025

पर्यावरण संरक्षण के लिए सामुदायिक भागीदारी

प्रदीप कुमार

सहायक प्राध्यापक, राठ महाविद्यालय पैठाणी पौड़ी, गढ़वाल उत्तराखंड

सारांश

इस अध्ययन का उद्देश्य प्रदूषण और पर्यावरणीय क्षति का पूर्वानुमान लगाने और उससे निपटने में सामुदायिक भागीदारी की जाँच और विस्तृत विवरण प्रस्तुत करना है, जिससे एक स्वस्थ और टिकाऊ जीवन का निर्माण हो सके। पृथ्वी और प्राकृतिक परिवेश को शांतिपूर्ण और समृद्ध जीवन के लिए रहने योग्य बनाने और सुनिश्चित करने के लिए पर्यावरणीय मुद्दे आवश्यक हैं। पर्यावरण को प्रदूषित करने वाले कार्य जीवन को नष्ट करने के समान हैं। पर्यावरणीय कुप्रबंधन कम से कम विभिन्न कारकों जैसे शिक्षा स्तर, आर्थिक समस्याओं, जीवनशैली, विधायी प्रणाली की कमजोरी और पर्यावरण प्रबंधन के कमजोर पर्यवेक्षण के कारण हो सकता है, जिससे पर्यावरण को प्रदूषण और क्षति होती है। गुणात्मक शोध करने के लिए एक मानक कानूनी पद्धति का उपयोग किया गया था। इंडोनेशिया में पर्यावरण प्रबंधन और संरक्षण पर ध्यान केंद्रित करते हुए, साहित्य, पुस्तकों, कानूनों और विनियमों, कानूनी सिद्धांतों और कानूनी विशेषज्ञों की राय सहित विभिन्न स्रोतों से डेटा एकत्र किया गया था। परिणाम बताते हैं कि पर्यावरण के बारे में जनता की जागरूकता सीमित है क्योंकि आम जनता पर्यावरणीय पहलुओं के बारे में अज्ञानता और पर्यावरण को प्रदूषित और नष्ट करने के परिणामों को नहीं जानती है। इस कारण, पर्यावरणीय समस्याओं से निपटने के लिए परामर्श,मार्गदर्शन, आदर्श उदाहरण और सामुदायिक भागीदारी जैसे प्रयासों की आवश्यकता है।शिक्षाप्रद-प्रेरक और निवारक आयामों के साथ कानून प्रवर्तन गतिविधियों में वृद्धिको बेहतर बनाने और फिर से प्रोत्साहित करने की आवश्यकता है। सरकार का प्रदर्शन भी आवश्यक है ताकि सफाई और रखरखाव के लिए मिलकर काम करके अपनेपर्यावरणीय कार्यों के महत्व के बारे में जनता की भागीदारी या जागरूकता पैदा की जा सके।

मुख्य बिंदु-पर्यावरण संरक्षण, पर्यावरण प्रबंधन,सामुदायिकभागीदारी।

प्रस्तावना

जैव विविधता का घटता स्तर और पारिस्थितिकी तंत्र के कार्यों का विनाश मानव जीवन के लिए गंभीर समस्याएँ और खतरे पैदा करता है। कई मानवीय गतिविधियाँ पर्यावरण पर दबाव डालती हैं, जिससे भूमि और समुद्र दोनों पर पर्यावरणीय क्षरण और पारिस्थितिकी तंत्र के कार्यों को नुकसान पहुँचने की संभावना है, जिसके परिणामस्वरूप भारी जनहानि होती है। अवैध और अंधाधुंध कटाई गतिविधियों और लागू नियमों की अनदेखी के परिणामस्वरूप भूमि को नुकसान पहुँचता है, जैव विविधता में कमी आती है, पारिस्थितिकी तंत्र के कार्यों में कमी आती है, जलवायु पैटर्न में बदलाव आता है, ओजोन परत का क्षरण होता है, ग्रीनहाउस प्रभाव होता है, ग्लोबल वार्मिंग होती है, भूस्खलन होता है और बाढ़ आती है। यह घटना प्राकृतिक संसाधनों के लिए उच्च स्तर का खतरा पैदा करती है जिससे पर्यावरणीय लचीलापन कम हो सकता है। मानवीय क्रियाएँ और गतिविधियाँ पर्यावरण और उसके आसपास के वातावरण में होने वाले परिवर्तनों, जैसे विकास, को प्रभावित करती हैं। चूँकि पर्यावरण प्राकृतिक और भौतिक रूप से होने वाले दबावों और परिवर्तनों के प्रति अत्यधिक संवेदनशील है, इसलिए पर्यावरण की गुणवत्ता कम हो जाती है। पर्यावरण संरक्षण एक शब्द है जिसका उपयोग पृथ्वी की सतह पर जीवन के विभिन्न रूपों, जीवित चीजों और उनके पर्यावरण के बीच परस्पर क्रियाओं का वर्णन करने के लिए किया जाता है।

अंतःक्रिया जीवन के सभी पहलुओं, अर्थव्यवस्था, समाज, पर्यावरण, ज्ञान, नैतिकता और एक भाग के दूसरे से संबंध को संदर्भित करेगी। वैश्विक स्तर पर, यह दुनिया भर में एक बहुत ही महत्वपूर्ण मुद्दा है। संयुक्त राष्ट्र के अनुसार, 2.6 बिलियन लोग भूमि पर निर्भर हैं, जिसमें 52ः भूमि कृषि के लिए उपयोग की जाती है। सालाना लगभग 12 मिलियन हेक्टेयर और 23 हेक्टेयर प्रति मिनट भूमि खो जाती है, और मरुस्थलीकरण या भूमि समाशोधन और सूखे के कारण 30ध्50 गुना अधिक मिट्टी की उर्वरता खो जाती है। वहीं, 80ः मानव भोजन पौधों से प्राप्त होता है। अवैध शिकार और वन्यजीव व्यापार के माध्यम से 120 देशों के अवैध व्यापार सूची में जानवरों और पौधों की 7,000 से अधिक प्रजातियां सूचीबद्ध हैं। पृथ्वी के सतह क्षेत्र का लगभग 3ध्4, जो लगभग 3 बिलियन लोग हैं, अपनी आजीविका के लिए महासागरों, समुद्रों और तटों दोनों में जैव विविधता पर निर्भर हैं वर्तमान में, इंडोनेशियाई सरकार विभिन्न क्षेत्रों में ऐसे विकास कार्यों को लागू कर रही है जो प्रकृति की स्थिरता को नुकसान पहुँचा रहे हैं। परिणामस्वरूप,

पारिस्थितिक तंत्रों में असंतुलन पैदा हो रहा है जिससे पर्यावरणीय क्षति हो रही है, इसलिए पर्यावरण-आधारित विकास को लागू करने के लिए एक विनियमन की आवश्यकता है।

पर्यावरण संरक्षण और प्रबंधन, पर्यावरणीय कार्यों को संरक्षित करने का एक एकीकृत प्रयास है, जिसमें पर्यावरण की संरचना, उपयोग, विकास, रखरखाव, पर्यवेक्षण की बहाली और नियंत्रण शामिल है। पर्यावरण संरक्षण और प्रबंधन से संबंधित 2009 के कानून संख्या 32 के आधार पर, पर्यावरण संरक्षण और प्रबंधन, नियोजन, उपयोग, नियंत्रण, रखरखाव, पर्यवेक्षण और कानून प्रवर्तन सहित पारिस्थितिक कार्यों को संरक्षित करने का एक व्यवस्थित और एकीकृत प्रयास है। पर्यावरण की रक्षा और प्रबंधन के प्रयास राज्य, सरकार और सतत विकास को लागू करने वाले सभी हितधारकों के दायित्व हैं ताकि इंडोनेशियाई पर्यावरण इंडोनेशियाई लोगों और अन्य जीवित प्राणियों के लिए जीवन का स्रोत और आधार बना रहे। पर्यावरण प्रबंधन आर्थिक, सामाजिक और सांस्कृतिक लाभ प्रदान करता है। यह पर्यावरणीय लोकतंत्र, विकेंद्रीकरण, मान्यता और स्थानीय ज्ञान और पर्यावरणीय बुद्धिमत्ता के प्रति सम्मान पर आधारित है। इंडोनेशियाई पर्यावरण को राज्य की जिम्मेदारी, स्थिरता और न्याय के आधार पर संरक्षित और उचित रूप से प्रबंधित किया जाना चाहिए। सतत विकास के लक्ष्य को साकार करने के लिए, कानून संख्या 32, 2009 के अनुच्छेद 70 द्वारा प्रदान किए गए तरीकों में से एक पर्यावरण संरक्षण और प्रबंधन में सामुदायिक भागीदारी को अनुकूलित करना है। यह लेख समुदाय द्वारा निभाई जा सकने वाली कई भूमिकाओं को रेखांकित करता है, जिसमें सामाजिक पर्यवेक्षण, राय, सुझाव, आपत्तियों, शिकायतों के लिए सुझाव प्रदान करना और सूचना औरध्या रिपोर्ट प्रस्तुत करना शामिल है।

इस प्रकार, मानक रूप से यूयूपीपीएलएच ने 1992 के रियो घोषणापत्र के सिद्धांत 10 को अपनाया है जो पर्यावरण संरक्षण और प्रबंधन में सामुदायिक भागीदारी के महत्व पर बल देता है। जीवन के सभी क्षेत्रों में, उनके निवास स्थान में पर्यावरण प्रबंधन में प्रदर्शन और सामुदायिक भागीदारी आवश्यक है। क्योंकि समुदाय को भी कानून (यूयू संख्या 32, 2009 अनुच्छेद (4)) के अनुसार पर्यावरण के संरक्षण और प्रबंधन में भाग लेने का अधिकार और जिम्मेदारी है। इस अध्ययन का उद्देश्य प्रदूषण और पर्यावरणीय क्षति का पूर्वानुमान लगाने और उससे निपटने में सामुदायिक भागीदारी की जांच और विस्तार करना है, जिससे एक स्वस्थ और टिकाऊ जीवन का निर्माण हो सके। यह शोध एक मानक कानूनी शोध है, अर्थात् पुस्तकों, कानूनों और विनियमों, कानूनी सिद्धांतों और कानूनी विशेषज्ञों की राय से प्राप्त द्वितीयक आंकड़ों का विश्लेषण करने के लिए किया गया शोध, विशेष रूप से इंडोनेशिया में पर्यावरण प्रबंधन और संरक्षण के संबंध में।

इस अध्ययन में विभिन्न परिकल्पनाएँ गुणात्मक वर्णनात्मक शोध के रूप में उभरीं।पर्यावरण संरक्षण और प्रबंधन के बारे में जन जागरूकता की कमी, कूड़े-कचरे की उच्च दर, भूमि उपयोग हस्तांतरण, जल निकासी, नदी प्रवाह, शहरी पार्क, संरक्षित वन और तटीय अपघर्षण के कारण पर्यावरण प्रबंधन और संरक्षण अभी भी अपर्याप्त है। आम जनता की पर्यावरण संबंधी पहलुओं के प्रति अज्ञानता और पर्यावरण को प्रदूषित करने और नुकसान पहुँचाने के परिणामों की जानकारी न होने के कारण पर्यावरण के बारे में जनता की कानूनी जागरूकता सीमित है। इसके अलावा, पर्यावरण के प्रबंधन और संरक्षण में जन जागरूकता बढ़ाने में कानून प्रवर्तन, प्रतिबंध और कमजोर नियम मुख्य समस्याएँ हैं। पर्यावरण के संरक्षण में सरकार की भूमिका और प्रदर्शन की भी बहुत आवश्यकता हैय यह पर्यावरणीय समस्याओं से निपटने में समुदाय के समाजीकरण, परामर्श और मार्गदर्शन जैसे पहलुओं की आवश्यकता है। इन स्थितियों को देखते हुए, पर्यावरण प्रबंधन और संरक्षण को मजबूत करने में सरकार, पर्यावरण प्रबंधकों, गैर-सरकारी संगठनों और समुदाय से ठोस और गहन सहयोग की आवश्यकता है।

चर्चा-

सुशासन के सिद्धांतों में से एक सामुदायिक भागीदारी है। सामुदायिक भागीदारी को एक ऐसी प्रक्रिया के रूप में परिभाषित किया जाता है जिसमें शासन, विकास और सामुदायिक विकास में नीतियों के निर्णय लेने, निर्माण, कार्यान्वयन और पर्यवेक्षण में आम जनता शामिल होती है। सामुदायिक भागीदारी को उन समूहों के बीच बातचीत के एक तरीके के रूप में परिभाषित किया जा सकता है जिन्हें निर्णय लेने की प्रक्रिया में शामिल नहीं किया गया है (गैर-अभिजात वर्ग) और उन समूहों के बीच जिन्होंने निर्णय लिए हैं (अभिजात वर्ग)। कई लोग सामुदायिक भागीदारी को सूचना (सार्वजनिक सूचना) प्रदान करने, परामर्श देने, यहाँ तक कि जनसंपर्क के एक साधन के रूप में भी देखते हैं ताकि ये गतिविधियाँ बिना किसी बाधा के चल सकें। इसलिए, सामुदायिक भागीदारी का उपयोग न केवल एक साध्य के रूप में किया जाता है, बल्कि एक साध्य के रूप में भी किया जाता है (भागीदारी अपने आप में एक साध्य है)। कोएस्नादी हार्डजासोमंत्री ने भी सामुदायिक भागीदारी की आवश्यकता व्यक्त की कि, निर्णयकर्ताओं के लिए मूल्यवान जानकारी प्रदान करने के अलावा, सामुदायिक भागीदारी लोगों द्वारा निर्णयों को स्वीकार करने की इच्छा की संभावना को कम करेगी। इसके अलावा, सामुदायिक भागीदारी कानून की रक्षा में मदद करेगी।

इंडोनेशिया गणराज्य के 1945 के संविधान और उसके संशोधनों को संवैधानिक आधार मानते हुए, यह अनिवार्य है कि प्राकृतिक संसाधनों का उपयोग लोगों की अधिकतम समृद्धि के लिए किया जाए। 1945 के संविधान के अनुच्छेद 33 के पैराग्राफ (3) में कहा गया है कि पृथ्वी, जल और उसमें निहित प्राकृतिक संपदा राज्य द्वारा नियंत्रित है और लोगों की अधिकतम समृद्धि के लिए उपयोग की जाती है। कल्याण में सुधार और कई समस्याओं के समाधान के लिए विकास की आवश्यकता के साथ-साथ, अनुभव बताता है कि विकास के कई नकारात्मक प्रभाव हो सकते हैं और हुए भी हैं। अस्थिर और असंवहनीय विकास की अवधारणा न केवल मौजूदा पर्यावरणीय और सामाजिक समस्याओं को बढ़ाएगी, बल्कि नई पर्यावरणीय समस्याओं को भी जन्म देगी, जिनमें वन और भूमि की क्षति, तटीय और समुद्री क्षति, जल और मृदा प्रदूषण, और वायु, शहरी और सामाजिक पर्यावरणीय समस्याएं शामिल

हैं।कोएस्नादी हरदजसोमंत्री ने मोएनादजत की राय ली कि पर्यावरण कानून आधुनिक पर्यावरणीय कानून है जो मानवीय कार्यों को विनियमित करने के लिए प्रावधान और मानदंड स्थापित करता हैजिसका उद्देश्य पर्यावरण को क्षति और उसकी गुणवत्ता में गिरावट से बचाना है, ताकि इसकी स्थिरता सुनिश्चित हो सके और इसका उपयोग वर्तमान और भावी पीढ़ियों द्वारा किया जा सके।

उन कार्यों के विरुद्ध यथाशीघ्र रोकथाम की जानी चाहिए जो जानबूझकर या अनजाने में पर्यावरणीय क्षति पहुँचाते हैं। यह विशेष रूप से उन कार्यों के लिए सत्य है जो व्यावसायिक गतिविधियों से प्रेरित हैं, जिनमें वानिकी, खनन और अपशिष्ट निपटान कंपनियाँ शामिल हैं। इन व्यवसायियों को पर्यावरणीय क्षति के जोखिम को ध्यान में रखना चाहिए और निवारक और दमनात्मक दोनों तरीकों से इससे निपटने के लिए निश्चित कदम तैयार रखने चाहिए। पर्यावरण प्रबंधन प्रशासनिक प्रक्रियाओं, जैसे लाइसेंसिंग, पर्यावरणीय प्रभाव विश्लेषण आदि में सामुदायिक भागीदारी बहुत महत्वपूर्ण है। पर्यावरण संरक्षण और प्रबंधन से संबंधित कानून संख्या 32, जिसे आगे ऋ्व्स्भ् के रूप में संक्षिप्त किया गया है, के अनुच्छेद 3 में निहित पर्यावरण संरक्षण और प्रबंधन के उद्देश्यों में से एक, मानव अधिकारों के हिस्से के रूप में पर्यावरण के अधिकार की पूर्ति और सुरक्षा की गारंटी देना है। यूयूपीपीएलएच में आठ अधिकारों को मान्यता दी गई है, अर्थात्: (1) एक अच्छेऔर स्वस्थ पर्यावरण का अधिकार एक मानव अधिकार के रूप में, (2) पर्यावरण शिक्षा का अधिकार, (3) सूचना तक पहुँच का अधिकार, (4) भागीदारी तक पहुँच का अधिकार, (5) पर्यावरण पर प्रभाव डालने वाले नियोजित व्यवसाय औरध्या गतिविधि के लिए प्रस्ताव या आपत्तियाँ प्रस्तुत करने का अधिकार, (6) पर्यावरण संरक्षण और प्रबंधन में भूमिका निभाने का अधिकार, (7) पर्यावरण प्रदूषण औरध्या क्षति के आरोपों के कारण शिकायत दर्ज करने का अधिकार, और (8) एक अच्छे और स्वस्थ पर्यावरण के अधिकार के लिए लड़ने पर आपराधिक और नागरिक मुकदमा न चलाए जाने का अधिकार।

जॉन स्टुअर्ट मिल (1963) का तर्क है कि स्थानीय स्तर पर भागीदारी, जहाँ भागीदारी की वास्तविक शिक्षा होती है, वहाँ व्यक्ति ''लोकतंत्र सीखेगा''। उन्होंने कहा कि लोग केवल शब्दों से पढ़ना या लिखना नहीं सीखते, बल्कि उन्हें करके सीखते हैं। इसलिए केवल छोटे पैमाने पर शासन का अभ्यास जारी रखने से ही लोग बड़े पैमाने पर इसका अभ्यास करना सीखेंगे। कानूनी प्रावधानों (पर्यावरण) की उपयुक्तता और अनुपालन, जन कानूनी जागरूकता का सूचक है। पर्यावरण प्रबंधन कानून के अनुसार, सामुदायिक भागीदारी, कानून प्रवर्तन के अस्तित्व के अलावा, पर्यावरण कानूनों को लागू करके, कानून प्रवर्तन सुविधाओं के माध्यम से कानूनी लक्ष्यों को प्राप्त करने का मुख्य घटक है। कोएस्नाडी हार्डजासोमंत्री द्वारा संदर्भित लोथर गुंडलिंग ने पर्यावरण प्रबंधन में सामुदायिक भागीदारी के कई लाभ बताए हैं, जैसेः सरकार को जानकारी प्रदान करना, लोगों में सरकारी निर्णयों को स्वीकार करने की इच्छा को बढ़ाना, और समुदाय द्वारा मुकदमा दायर करने से रोकना।इसी तरह, पर्यावरण प्रबंधन प्रशासनिक प्रक्रियाओं, जैसे लाइसेंसिंग, पर्यावरणीय प्रभाव विश्लेषण आदि में सामुदायिक भागीदारी अत्यंत महत्वपूर्ण है। लाइसेंसिंग, पर्यावरणीय प्रशासनिक कानून के न्यायिक उपकरणों में से एक है। प्रशासनिक कानून के कार्य से संबंधित वान विज्क और कोनिजेनबेल्ट ने अपनी पुस्तक ''हूफडस्टुक्केन वान एडमिनिस्ट्रेटीफ'' में इसे प्रस्तुत किया हैः

''प्रशासन चाहता है, प्रशासन के साथ काम करने के लिए सबसे अच्छा तरीका, बोलना, बेहतर होना। वैश्विक स्तर परः वह समनलेविंग के साथ काम करने के लिए ओवरहेड न्यायिक उपकरण के लिए हैय और एक और दूसरे से संपर्क करने के लिए कहा गया है। इसके अलावा, मुझे यह भी पता चला कि मुझे अपने काम के बारे में कुछ भी पता नहीं है। इसका अर्थ है कि प्रशासनिक कानून, शासन कानून, इन सभी में प्रशासन, प्रशासन, प्रशासन शामिल है। सामान्य तौर पर, यह कहा जा सकता है कि प्रशासनिक कानून शासक के लिए समुदाय के साथ सक्रिय रूप से जुड़ने का एक न्यायिक साधन है और दूसरी ओर, प्रशासनिक कानून एक ऐसा कानून है जो समुदाय के सदस्यों को शासक को प्रभावित करने और शासक को सुरक्षा प्रदान करने की अनुमति देता है। प्रशासनिक कानून प्रवर्तन, प्रशासनिक कानून के दायरे का हिस्सा है, जहाँ प्रशासनिक कानून प्रवर्तन, अनुपालन सुनिश्चित करने के लिए सरकार के स्वामित्व वाला प्रशासनिक कानून का एक साधन है, जिससे प्रशासनिक कानून प्रवर्तन के दो (दो) गुण होते हैं, अर्थात् निवारक और दमनकारी। निवारक प्रकृति कानूनों और विनियमों या पर्यावरणीय लाइसेंसिंग प्रावधानों के उल्लंघन को रोकने के लिए रोकथाम है। यह निवारक कार्रवाई प्रशिक्षण और पर्यवेक्षण के माध्यम से की जाती है। जबकि दमनकारी प्रकृति से तात्पर्य कानूनों और विनियमों या पर्यावरणीय लाइसेंसिंग प्रावधानों के उल्लंघन पर प्रशासनिक प्रतिबंध लगाने की क्रिया से है।

संक्षेप में, प्रशासनिक प्रतिबंधों के अनुप्रयोग में शामिल हैंः उल्लंघनों को रोकना औरध्या रोकनाय किसी व्यवसाय औरध्या गतिविधि के परिणामस्वरूप होने वाले नुकसान औरध्या प्रदूषण से पर्यावरणीय और सामुदायिक कार्यों की रक्षा करनाय प्रदूषण औरध्या क्षति के कारण होने वाले जोखिम, खतरे, हानि औरध्या पीड़ितों को न्यूनतम या कम करना ताकि व्यवसाय औरध्या गतिविधि को रोकने के प्रयास किए जा सकेंय ऐसे व्यवसायों औरध्या गतिविधियों पर निवारक प्रभाव पैदा किया जा सके जो पर्यावरण क्षेत्र के कानूनों और विनियमों औरध्या पर्यावरण लाइसेंसिंग प्रावधानों का उल्लंघन करते हैं।हरदजसोमंत्री निम्नलिखित शर्तों को पूरा करने की आवश्यकता को देखते हैं ताकि सामुदायिक भागीदारी प्रभावी और कुशल हो सके, गतिविधि के आरंभकर्ता को अपनी गतिविधि की योजना की घोषणा करने की आवश्यकता के द्वारा सूचना की प्राप्ति सुनिश्चित करनाय सीमा पार सूचना (ट्रांसफोर्टीयर सूचना)य यह देखते हुए कि पर्यावरणीय समस्याएं मानव निर्मित सीमाओं को नहीं पहचानती हैं, ऐसी संभावना है कि एक क्षेत्र में पर्यावरणीय क्षति पड़ोसी प्रांतों या देशों को भी प्रभावित करेगी। इसलिए संबंधित क्षेत्रों को शामिल करते हुए सूचना और पर्यवेक्षण का आदान-प्रदान महत्वपूर्ण हैय समय पर सूचना (समय पर सूचना)य एक प्रभावी सामुदायिक भागीदारी प्रक्रिया के लिए अंतिम निर्णय लेने से पहले यथासंभव शीघ्र और सटीक सूचना की आवश्यकता होती है। इस प्रकार, विकल्पों पर विचार करने और प्रस्ताव करने का अवसर अभी भी मौजूद हैय पूर्ण और व्यापक जानकारीय यद्यपि सूचना की विषय-वस्तु नियोजित गतिविधि की आवश्यकताओं के आधार

पर अलग-अलग होगी, लेकिन संक्षेप में सूचना में गतिविधि योजना का विस्तार से वर्णन होना चाहिए, जिसमें अन्य विकल्प भी शामिल होने चाहिए।

सामुदायिक भागीदारी बढ़ाने के प्रयास-

पर्यावरण संरक्षण एवं प्रबंधन से संबंधित कानून संख्या 32, 2009 के अनुच्छेद 70 के अनुच्छेद (1) में कहा गया है कि ''समुदाय को पर्यावरण संरक्षण एवं प्रबंधन में सक्रिय भूमिका निभाने के समान और व्यापकतम संभव अधिकार एवं अवसर प्राप्त हैं''। अनुच्छेद 70 के अनुच्छेद (2) में पर्यावरण संरक्षण एवं प्रबंधन में समुदाय की भूमिका निम्नलिखित रूपों में हो सकती हैः सामाजिक निगरानीय सुझाव, राय, प्रस्ताव, आपत्तियाँ, शिकायतें देनाय सूचना औरध्या रिपोर्ट प्रस्तुत करना। वहीं, अनुच्छेद 70 के अनुच्छेद (3) में कहा गया है कि समुदाय की भूमिका निम्नलिखित उद्देश्यों के लिए निभाई जाती हैः पर्यावरण संरक्षण एवं प्रबंधन में जागरूकता बढ़ानाय स्वतंत्रता, सामुदायिक सशक्तिकरण और भागीदारी बढ़ानाय सामुदायिक क्षमता और अग्रणी भूमिका बढ़ानाय सामाजिक पर्यवेक्षण करने के लिए सामुदायिक जवाबदेही विकसित करनाय पर्यावरणीय कार्यों के संरक्षण के संदर्भ में स्थानीय संस्कृति और ज्ञान का विकास और रखरखाव करना।

कानून संख्या 32, 2009 के अनुसार पर्यावरण संरक्षण एवं प्रबंधन में समुदाय की भूमिका के संबंध में, कुछ उदाहरण दिए गए हैं जैसेय सिगरेट के बट न छोड़ें, भले ही वे छोटे अंगारे ही क्यों न हों, सिगरेट के बट जंगल की आग का एक कारण हो सकते हैं, खासकर शुष्क मौसम में। अकार्बनिक कचरे को न फेंकेः प्लास्टिक, स्टायरोफोम, डिब्बे, बैटरी आदिय पर्यावरण को नष्ट न करें, जंगलों, जल और वायु को प्रदूषित न करें। पर्यावरण प्रबंधन, जिसमें रोकथाम, क्षति और प्रदूषण की रोकथाम और पर्यावरणीय गुणवत्ता की बहाली शामिल है, ने अन्य पर्यावरण प्रबंधन सहायता प्रणालियों द्वारा समर्थित विभिन्न नीतियों, कार्यक्रमों और गतिविधियों के विकास की मांग की है। इस प्रणाली में संस्थागत स्थिरता, मानव संसाधन और पर्यावरणीय भागीदारी शामिल है। पर्यावरण के सार की अन्योन्याश्रयता और पूर्णता (समग्र) की प्रकृति ने यह परिणाम लाया है कि पर्यावरण प्रबंधन, इसकी सहायता प्रणाली सहित, अकेले नहीं खड़ा हो सकता, सहयोग नहीं कर सकता और इसके कार्यान्वयन के साथ एकीकृत नहीं हो सकता। पर्यावरण संरक्षण और संरक्षण में सामुदायिक भागीदारी को बढ़ाना व्यक्तिगत रूप से और विभिन्न संगठनों के सदस्यों से युक्त समूहों में दोनों तरह से पूरा किया जा सकता है।

संगठन की स्थापना एक अच्छे और स्वस्थ पर्यावरण को बनाए रखने में समुदाय की भागीदारी के एक आवश्यक घटक के रूप में की गई थी। सामुदायिक भागीदारी को बेहतर बनाने के लिए कई उपाय किए जा सकते हैं, जिनमें शामिल हैंः (1) औपचारिक और अनौपचारिक शिक्षा के माध्यम से पर्यावरण जागरूकता की समझ और प्रशंसा विकसित करना (2) सामुदायिक समूहों को पर्यावरण विकास आंदोलनों में भाग लेने के लिए आमंत्रित करना, जैसेः धार्मिक नेता, इस विचार से शुरुआत करते हुए कि ईश्वर प्रदत्त प्राकृतिक संसाधनों का संरक्षण और उपयोगधार्मिक शिक्षाओं का हिस्सा हैय महिलाएँ, इस अवलोकन के आधार पर कि महिलाएँ इंडोनेशिया की कुल आबादी का बहुसंख्यक समूह (51ः) हैं और दैनिक रूप सेघरेलू, आवासीय और सामाजिक वातावरण में शामिल होती हैंय युवा, भविष्य में पर्यावरण और प्राकृतिक संसाधनों को विरासत में पाने वाली पीढ़ी के रूप में, प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण को लेकर सबसे अधिक चिंतित हैं। साथ ही, पर्यावरण विकास में युवाओं की भागीदारी मातृभूमि के प्रति प्रेम और देशभक्ति की भावना को बढ़ावा देने के लिए स्कूल के बाहर की शिक्षा का एक तत्व भी हैय पत्रकार और अन्य टिप्पणीकार संदेशवाहक, प्रेरक और प्रेरक बनने के साथ-साथ समाज में पर्यावरण संरक्षण के मूल्यों के साथ जीने का दृष्टिकोण विकसित करने में सक्षम होंय अन्य सामुदायिक संगठन जो पर्यावरण में लगे हों और स्वेच्छा से पर्यावरण विकास में शामिल हों।

निष्कर्ष

अनिवार्यतः, प्रत्येक व्यक्ति पर्यावरण प्रबंधन में अधिकारों, दायित्वों और कार्यों वाला एक समुदाय का सदस्य है। पर्यावरण प्रबंधन इंडोनेशिया में कहीं भी किया जा सकता है। इसके अलावा, पर्यावरण निर्माण में समुदाय की भूमिका स्वयं पर्यावरण की रक्षा की आवश्यकता से अभिन्न रूप से जुड़ी हुई है। पर्यावरण प्रबंधन और संरक्षण में समुदाय की भागीदारी 2009 के कानून संख्या 32 में देखी जा सकती है, जो बताता है कि समुदाय पर्यावरण संरक्षण में सामाजिक पर्यवेक्षण कैसे प्रदान करता हैय पर्यावरण प्रबंधन और संरक्षण को बेहतर बनाने के लिए सुझाव, टिप्पणियाँ और रिपोर्ट कैसे प्रदान करता है। समुदाय की भागीदारी को सशक्त और सहयोगित करके, क्षमताओं और अग्रदूतों को विकसित करके, सामाजिक पर्यवेक्षण करने के लिए समुदाय की प्रतिक्रियात्मकता विकसित करके, और पर्यावरणीय कार्यों के संरक्षण के संदर्भ में स्थानीय संस्कृति और ज्ञान को विकसित और बनाए रखकर बढ़ाया जा सकता है।

संदर्भ सूची

1. टी. सुलिस्त्यानिंग्सिह एट अल., '' फार्समुलेटिंग सस्टेनेबल वाटरशेड गवर्नेंस मॉडलः अ मेटा-विश्लेषण आफ वाटरशेड गवर्नेंस ,'' एकेड. जे. इंटरडिसिप्लिन. स्टड., वाल्यूम 10, न. 2,पीपी. 90-104, 2021.
2. ई. पी. पुर्नोमो, एम. आई. फधलुर्रोहमान, एल. साल्साबीला, ए. टी. फथानी, एस. सुजुद, और वाई. विडोवती, एनालिसिस आफ सस्टेनेबल हेल्थ डेवलपमेंट गोल्स इन इमपावरिंग पब्लिक हेल्थ, वोल्यूम 1352. चैमः स्प्रिंगर इंटरनेशनल पब्लिशिंग, 2021.

3. ई. खैरिना, ई. पी. पुरनोमो, और ए. डी. मालवनई, ''सस्टेनेबल डेवलपमेंट गोल्स: केबीजाकन बेरवावासन लिंगकुंगन गुना मेंजागा केताहनन लिंगकुंगन डि कबुपाटेन बंटुल डेराह इस्तिमेवा योग्यकार्ता,'' जे. केताहनन नास., वोल्यूम 26, न. 2, पीपी. 155, 2020.
4. यूनाइटेड नेशंस, ''सस्टेनेबल डेवलपमेंट गोल्स 10ः रिड्यूस इनइक्वालिटी विदिन एंड अमोंग कन्ट्रीज,'' सस्टेनेबल डेवलपमेंट.यूएन.ओआरजी,2019.
5. जी. श्मिट-ट्रॉब, सी. क्रोल, के. टेक्सोज, डी. डूरंड-डेलाक्रे, और जे. डी. सैक्स, ''नेशनल बेसलाइन्स फॉर द सस्टेनेबल डेवलपमेंट गोल्स असेस्ड इन द एसडीजी इंडेक्स एंड डैशबोर्ड,'' नैट. जियोसाइन्स, वोल्यूम 10, न. 8, पीपी. 547-555, 2017.
6. ए. एच. रहाडियन, ''स्ट्रेटेजी पेम्बंगुनन बर्केलंजुटान (सस्टेनेबल डेवलपमेंट स्ट्रेटेगी),'' प्रो. सेमिन. स्टीआमी (सेमिनार प्रो. स्टीआमी), वॉल्यूम 3., न. 01, पीपी.. 46-56, 2016.